श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय, जन-वाणी दिवस के सिलसिले में हमारे यहां से जो लोग आये थे, उन में श्री बिहारी नाम का एक साठ साल का बूढ़ा भी था। उस को बुरी तरह से मारा गया। वह कल हास्पिटल में मर गया। इसी लिए मैं ने एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव दिया है। जब इतनी महत्वपूर्ण घटना घटे–एक आदमी मर जाये, तो एक ही दिन दो ध्यानाकर्षण प्रस्ताव भी लिये जा सकते हैं। कल ही हम ने अपने नियमों को स्थगित किया था। मैं ने 184 के अन्तर्गत चाहा है कि आप हमें इस मामले को उठाने की इजाज़त दें।

SHRI HEM BARUA (Mangaldai): During question hour when this matter was raised concerning the death of this person due to police atrocities, you promised that the Home Minister will be asked to make a statement. He should make that statement now.

MR. SPEAKER: I have referred it to him for making a statement.

श्री राम सेवक यादव : मैं 184 के अन्तर्गत इस सवाल को उठाना चाहता हूं। हम कुछ बातें जानना चाहते हैं। मंत्री महोदय पहले मुझे सुन लें और उस के बाद अपना बयान दें, तो ज़्यादा अच्छा होगा।

अध्यक्ष महोदय : मैं ने मिनिस्टर साहब से बात की है। वह अपना स्टेटमेंट देने जा रहे हैं।

श्री राम सेवक यादव : आप पहले मेरी बात सुन लें और फिर मंत्री महोदय जवाब दें।

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA (Barh): Later on questions may be allowed to be put to the Home Minister.

श्री राम सेवक यादवः मैं चाहता हूं कि इस आदमी के बारे में बतायें, जिस की मृत्यु हुई है, जो शहीद हुआ है, दूसरे—बहुत सी औरतें, मर्द और बच्चे गायब हैं, तीसरे—जो आदिवासी आये थे, उन का 6-7 हज़ार रुपया छीन गया, घड़ियां छीनी गई, उन का सामान छीना गया, ये सब बातें है, जिन के बारे में मंत्री महोदय बतायें तथा बाद में, अध्यक्ष महोदय, हम को प्रश्न पूछने की इजाज़त दें।

अध्यक्ष महोदय : सुबह भी यह प्वाइन्ट उठाया गया था और उस वक्त मैंने कहा था—

Let the Home Minister come out with the information and make a statement.

डा० राम सुभग सिंह : इस में एक चीज़ और जोड़ दी जाय। पार्लियामेंट हाउस के आसपास हर समय दफ़ा 144 लगी रहती है और उस को यह सरकार अपनी सुविधा के अनुसार हटाती है और बढ़ाती है। जब श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा को मारा-पीटा गया था, उस समय यह हटा दी थी। मैं चाहता हूं कि इस को भी लिया जाय।

अध्यक्ष महोदय : इस को बाद में देखेंगे।

13.01 hrs.

STATEMENT RE. MEDICAL ATTENTION GIVEN TO PERSONS INJURED IN POLICE LATHI CHARGE ON 6TH APRIL, 1970

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): Yesterday at about 11 O' Clock a person whose name is given as Bihari was brought to the Willingdon Hospital by one Shri Bhagwan Din. He was found to be in a semi-coma and semi-conscious. Medical attention was given to him by the doctors who were present there, and he expired at about 2.15.

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi): Murder.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: His body was sent for post mortem.

श्री रवि राय (पुरी) : कारण क्या था– यह नहीं बता रहे हैं, वह क्यों मरा ? उस के मरने की क्या वजह थी ? उस को पुलिस ने मारा था– यह बात नहीं बतला रहे हैं। सदन को गुमराह कर रहे हैं अपने बयान में उस के मरने का कारण बतलाइये

अध्यक्ष महोदय : आप पहले सुन तो लें ।

SHRI DATTATRAYA KUNTE (Kolaba) : What is the cause of the death?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : I was coming to that. (*Interruptions*). I was saying that his body was sent for post mortem. The post mortem report is expected. As soon as the report is in our hands, we shall inform the House about its contents. That report has not yet been received by us.

SHRI M. L. SONDHI : Being cooked up.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : There is no cure or your doubts.

SHRI M. L. SONDHI : There is a cure. You quit your office.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : Regarding the three Members of Parliament who were admitted to hospital, Shri Raj Narain, Shri George Fernandes and Shri Arjun Singh Bhadoria, they are still in hospital, but they are reported to be progressing satisfactorily.

श्री रवि राय : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कारण नहीं बताया– यह सदन के प्रति अपमान है । उन को अस्पताल क्यों ले जाया गया, वह क्यों मरे ? ये कहते हैं कि पोस्ट-मार्टम रिपोर्ट आयेगी तब बतायेंगे । आप इन को कहिये कि उस का कारण बतायें ।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : जिस आदमी की मृत्यु हुई है, कम से कम मंत्री महोदय थोड़ा सा उस के प्रति सहानुभूति प्रकट करते, लेकिन . . .

अध्यक्ष महोदय : आप ने पहले कह लिया है, फिर आप बार-बार क्यों उठते हैं ।

SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI (Gonda) : We were there till 1 O'Clock in the night. We know all about it. We want to ask a question. He was deliberately murdered.

MR. SPEAKER : When this post mortem report comes, I also expect him to come out with other relevant information about the circumstances of his death.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Balrampur) : What about the doctor's report ?

अध्यक्ष महोदय, यह मामला बहुत गम्भीर है। उस को अस्पताल में भरती किया गया. . .

श्री राम सेवक यादव : डा० सुशीला नैयर हमारे साथ मौजूद थीं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी मंत्री महोदय ने कहा कि वह बेहोष था । क्या डाक्टर ने उस को देखा ? डाक्टर की रिपोर्ट क्या थी ? क्या उस के शरीर पर चोटें थीं, क्या वे चोटें मारक थीं ? पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट बाद में आयेगी, लेकिन पहले ये सदन के सामने तथ्य तो बतलायें ।

SHRI J. B. KRIPALANI (Guna) : When the police are ordered to lathi-charge, it should be the obligation of the Government to make arrangements for doctors there before they take such a step. What is this ? They are playing with human lives.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : The Doctor's report says. . . (*Interruptions*).

श्री रवि राय: आप पहले डा० सुशीला नैयर को सुन लीजिये ।

SHRI J. B. KRIPALANI : You tell him to sit down. They left him unattended for hours. This man was taken by us at 11 O'Clock in the night. The lathi charge was at one O'Clock. You must listen to us. This is not a question of any party. This is a question of humanity. Are we dealing with men or animals ? Even animals are not left like that. They order a lathi-charge and they order tear gas to be used and they do not keep any person there to attend to the wounded. Even the wounded Parliament Members were not attended to; they had to be taken to the hospital. This is a very serious thing.

डा० सुशीला नैयर (झांसी) : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहती हूं—क्या यह सत्य है कि इस आदमी के सिर पर इतनी चोटें थीं कि उस के सिर पर बहुत बड़ा 'हीमेटोमा' बना हुआ था और वह डीप-कौमा में

था ? क्या यह सत्य है कि इस को उठा कर हस्पताल नहीं ले जाया गया और मारपीट कर पुलिसवाले शाम को अस्पताल ले जाने के बजाय कैम्प के तम्बू के पास डाल गये ? वहां से उस के साथी उस को अस्पताल ले गये ? क्या यह सत्य है कि रात के 12-साढ़े बारह बजे जब मैं उस को अस्पताल में देखने के लिये गई, वहां उस को एक हाउस सर्जन के सिवाय किसी ने देखा नहीं था, कोई देखने वाला नहीं था । अध्यक्ष महोदय—मैं जानती हूं—मेरा भाई भी इसी तरह अस्पताल में चोट लगने के बाद बेहोष पड़ा रहा, उसको भी एक हाउस सर्जन के उपरान्त किसी ने देखा नहीं था, आप के मिलिट्री के ट्रक ने उस का सिर फोड दिया था । किसी ने उस की तरफ ध्यान नहीं दिया था, वह मर गया । यह श्री बिहारी भी मर गया । किसी ने ध्यान नहीं दिया । वह भी किसी का बाप था, किसी का बेटा था और वह मर गया बिना इलाज . . .

डा० राम सुभग सिंह : उस को जान से मार दिया ।

डा० सुशीला नैयर : मैं जानना चाहती हूं क्या पुलिस को उसे अस्पताल नहीं ले जाना चाहिये था । 8 घन्टे इसी तरह चले गये, शायद पहले स्पेशलिस्ट देखते, कुछ किया जाता, तो वह बच जाता ।

SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI: For eight hours nobody attended to them. When we went to the Parliament Street Police station, we found that for eight hours those persons were unattended; they were not given food; they were not given water. We have seen with our own eyes.

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA: It was a pre-planned genocide and political annihilation of the Socialist Party because it was a critic of the Prime Minister and the Government.

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) : इन्होंने अपने भाषण में कहा है कि उन की मृत्यु हो गई है और पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट को वे यहां पर पेश करेंगे । लेकिन वह शख्स—जिस को पुलिस ने लाठियों से मारा, 60 साल का वह बुजुर्ग—बिहारी सिंह, बाराबंकी का रहने वाला, वह भी जलूस में था । इतने जख्म उस पर हो चुके थे कि उस में बोलने की भी शक्ति नही थी, सिर पर इतनी जबरदस्त लाठी लगी थी कि उस में होश ही नहीं था । जब उन को राम सेवक यादव के मकान पर ले गये, तब उन्होंने अपने आदमियों को भेज कर उस को अस्पताल में भरती कराया । इतनी ज्यादा बदतमीजी पुलिसवालों ने उस वक्त की कि लाठी मारने के बाद–चाहे वह बहन हो, मां हो या कोई बच्चा हो या हमारे पिता समान कोई बुजुर्ग हो, किसी को उठा कर अस्पताल तक पहुंचाने की उन्होंने कोशिश नहीं की । पार्लियामेन्ट स्ट्रीट के थाने में एक कमरे के अन्दर, ब्लैक-हाल की ट्रेजिडी बना रखी थी । सुचेता जी और दूसरे मेम्बर्ज जब वहां गये और चव्हाण साहब को टेलीफोन किया, तब उन के लिये खाना मंगाया गया—रात के 11-12 बजे । मुझे खुशी है कि यह मामला प्रिवलेजिज कमेटी को जा रहा है, लेकिन जिस तरह से हत्याकाण्ड हुआ है, दिल्ली में आज तक ऐसा नहीं हुआ । अगर इसी तरह से 20वीं सदी में ये लोग नादिरशाही कत्लेआम करना चाहते हैं तो मैं बता देना चाहता हूं कि लोग इस का पूरा जवाब दे सकते हैं । मैं चाहता हूं कि शुक्ला जी सही रिपोर्ट दें, इस को छुपाने की कोशिश न करें, पुलिस को बचाने की कोशिश न करें । अगर इन के दोनों हाथ खून से रंगे हुए हैं तो इस्तिफ़ा दें, नहीं तो साफ़ साफ़ बतायें कि उस की मृत्यू कैसे हुई ।

SHRI J. B. KRIPALANI: The police are framing a case against these persons. They have accused them of attempting to murder. It is under this section that these 102 people have been arrested. We went and saw them there. They have charged 102 people.

श्री राम सेवक यादव : अध्यक्ष महोदय, मेरा इस मामले में विनम्र निवेदन है कि उस व्यक्ति को पुलिस ने बुरी तरह से मारा, पुलिस उसको अस्पताल नहीं ले गई–पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की । उसका प्रथम उपचार साउथ एवेन्यू की डिस्पेंसरी में हुआ और वह भी करीब 6-7

[श्री० राम सेवक यादव]

बजे और उसके बाद में फिर उसे रात में विलिंगडन अस्पताल ले जाया गया । हम लोगों ने देखा है—सुचेता जी और डा० सुशीला नैयर भी साथ में थी—कि उसके सिर पर भारी जबर्दस्त चोट थी और साथ ही और भी बहुत सी पीछे खरोंचें थी । तो रपट में क्या है, उसकी जानकारी इस सदन को होनी चाहिये ।

अध्यक्ष महोदय, कल सदन ने एकमत से न्यायिक जांच के लिए तय किया है लेकिन अगर तत्काल जांच की व्यवस्था नहीं होती और सारे कागजात को अपने हाथ में नहीं लिया जाता तो फिर वास्तविक जांच नहीं हो पायेगी ।.. **(व्यवधान)** . . .

अध्यक्ष महोदय, बहुत से बच्चे अभी गायब हैं जिनमें से कुछ के नाम मैं अभी दे सकता हूं । इसके अतिरिक्त लोगों का रुपया पैसा लूटा गया है । तो इस तरह से काम चलने वाला नहीं है । इस मामले में हम सभी लोगों की भावनायें बहुत ही दुखी हैं और इसके ऊपर अगर इस तरह से जले पर नमक छिड़का जायेगा तो मैं नहीं समझता मनुष्य की जिन्दगी की कब इस देश में इज्जत होगी ? यह भी कहा जा रहा है कि तीर चलाये गए, लेकिन मंत्रीजी हमारे साथ थे, अस्पताल में हम ने डाक्टर से पूछा कि कहां है तीर तो वे चुप रहे । श्री निहाल सिंह जी भी वहां पर थे, उन्होंने कहा कि आपने कमान क्यों नहीं छीना ? . . . **(व्यवधान)** . . .

SHRI H. N. MUKERJEE (Calcutta—North-East): Sir, the emotion of the Members is quite understandable. But when it is reported that yesterday, within a hundred yards or a couple of hundred yards from Parliament House, Members of Parliament and others who had congregated there were not only lathi-charged but Members of Parliament were beaten badly as they were, and casualties, even death, have taken place, when it is reported that there was no arrangement made for medical treatment, that food was not given, that people were dragged along the streets, that they were kept for long hours without any kind of sustenance, and that as a result of it, cumulatively speaking, death has taken place, when all these matters are reported on the floor of the House, it certainly behoves the Government, the Home Ministry, to come forward and give us satisfaction over this matter which has happened yesterday. The Government have had the opportunity of gauging how the House was reacting to it. Today, they come with an announcement that on the post-mortem examination report being available, they would tell us something about it. But the whole matter of the handling of yesterday's demonstration is something which require a thorough explanation from Government. Till that is forthcoming, they are in the dock. We have to say this in Parliament: until that explanation is forthcoming they are in the dock, and they have got to satisfy Parliament that their conduct, as far as they themselves are concerned, has been unexceptionable. But the result shows, that death shows—all kinds of things which are reported on all sides of this House—an indication that something most dastardly has taken place, and that is why Government must give an explanation to the House as soon as ever that is possible.

श्री रवि राय : अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि कल जो चीज़ हो गई उसमें ऐसा लगता है कि चव्हाण साहब ने माइकेल ओ डायर को भी मात कर दिया । 65 मर्द, 13 छोटे बच्चे और 23 औरतें अभी भी लापता हैं । इसके अलावा सहारनपुर का एक बुड्ढा, श्री नाथू दास भी लापता है । ऐसा लगता है कि यह सरकार सारी सीमाओं, सिद्धांतों और मानवता को खत्म कर चुकी है । आप कम से कम गृह मंत्री से कहें कि आज शाम पांच बजे तक इस सदन में यह बयान दें कि उन मर्दों, बच्चों और औरतों का क्या हुआ और उस बेचारे बुड्ढे नाथूदास का क्या हुआ ? वह बुड्ढा मर गया है या उसको मार कर भगा दिया गया है—इसके बारे में 5 बजे तक इस सदन के सामने बयान आना चाहिये ।

SHRI RANJEET SINGH (Khalilabad): Certain specific answers have been asked for over here, and immediate answers can be given to them. It is not understood why they are not being given. For instance, what is the

doctor's report that was immediately taken down in writing at the Willingdon Hospital? Whoever is injured after police action, is it not part of the duties of the police to remove them to the hospital? I want to know how many such injured persons were taken to the hospital by the police.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): Government's plea that they are awaiting the post mortem report and as soon as it comes it will be placed on the Table does not satisfy us. The post mortem report comes at a later stage. We want to know what was their condition when they were admitted into the hospital, and what was the casualty department report? What was the extend of the wounds and what was the number of people injured? The minister said that the condition of the MPs is satisfactory, but we do not know what is the condition. Apart from what we read in the newspapers, the House has not been given information about the condition of the MPs, what was the extent of their wounds and so on. We understand that Mr. George Fernandes has received a gashing wound on his head. What is the extent of the wound? We do not know. I want a categorical answer about the extent of wounds sustained by the MPs and also by the unfortunate person who is reported to have died? What was the report taken down at the casualty department? These reports must be available. These points should be made known to the House, though the post mortem report may come later.

SHRI HEM BARUA (Mangaldai): During the Question Hour, when you asked the Home Minister to make a statement, possibly you expected a fuller statement. But the minister has made a statement in a very cavalier manner and in a very indifferent manner. Members have raised certain specific issues. The statement must contain replies to those basic issues, whether the man who unfortunately died in hospital was taken to the hospital in time or not, whether he was taken there by policemen or by somebody else, what was the extent of the wounds suffered by them—all these things can be said in this House.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने जो वक्तव्य दिया है उसमें मरे हुए व्यक्ति के नाम के आगे 'श्री' लगाने तक की सौजन्यता नहीं दिखलाई गई। वह स्वर्गीय रफी अहमद किदवई का सहयोगी था और ये कहते हैं कि बिहार का है। क्या इस तरह से ये शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं? ये इस तरह से शहीदों को अपमानित नहीं कर सकते।... (**व्यवधान**)...

SHRI M. L. SONDHI: The House should stand up in memory of the person who has died and teach a lesson to this impertinent, junior minister. (*Interruptions*). I saw with my own eyes a cripple being beaten up in the Parliament Street police station. This is a crime against humanity. I charge Mr. V. C. Shukla of abetting such offences.

SHRI SAMAR GUHA (Contai): What will happen to the whole country if such things are happening here—— (*Interruptions*).

SHRI M. L. SONDHI: These criminals who are the inheritors of the Britishers, the O'Dwyerssitting yonder there, they have brought shame to the whole House. Sir you have drunk the waters of the five rivers and you know how people fought for freedom. But these people want human dignity to be demolished. One of our lady members wept. Sir, why don't you pull him up? It is an insult to the Parliament of India ... (*Interruptions*).

SHRI SAMAR GUHA: Sir, the Minister has acted in the most discourteous manner. He has dishonoured us, dishonoured the House, dishonoured human dignity, dishonoured everything . . . (*Interruptions*). It was the most discourteous statement that one could ever make. He should have been ashamed of making such a statement. We want fuller information . . . (*Interruptions*).

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़): अध्यक्ष महोदय, मैं अपने सहयोगियों के स्वर में स्वर मिलाते हुए केवल दो बातें गृह मंत्री महोदय से कहना चाहता हूं। मानवता का तकाजा यह था कि जिस समय उन्होंने घायलों की सूची या संख्या बताई उस समय उन को सदन् को संतुष्ट करने के लिए इतनी बात अवश्य बतानी चाहिये थी कि जो घायल कल के प्रदर्शन में हुए हैं वह किस किस अस्पताल में हैं, किस स्थिति में हैं। अगर वह नहीं तो कम से कम

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

वह हमारे तीन साथी जो इस सदन् के सदस्य हैं और जिनके कल खून में रंगे हुए कपड़े हमारे मित्रों ने दिखाए थे उन के सम्बन्ध में उन को जरूर विस्तार से बताना चाहिये कि वह किस अस्पताल में हैं और अब किस स्थिति में हैं ?

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं जैसा कि डा० सुशीला नायर ने कहा है, अगर उस बात में सत्यांश है जैसा कि उन के कथन से प्रतीत होता है तो गृहमंत्री जी को कम से कम इस बारे में सदन् को अवश्य आश्वस्त करना चाहिए कि जिन अधिकारियों की उपेक्षा से इस प्रकार से वह बुजुर्ग शहीद हुए हैं, इसके लिये जिम्मेदार अधिकारियों को तत्काल मुअत्तिल किया जायेगा । इस प्रकार के व्यक्ति अपने पदों पर नहीं रक्खे जा सकेंगे ?

SHRI J. B. KRIPALANI: It is politics. It is not the fault of the police. It is the politicians who ordered the police. Being in power they wanted to teach a lesson to those people who speak against the Prime Minister. They say: "we shall see what is going to happen to such people". I am saying this with all the emphasis that I possess. I say definitely that it is not the fault of the police. It is the politicians who ordered this in order to occupy their chairs somebody here says that in denouncing the Government I am playing politics. This is nonsense. I have spoken in favour of the Congress. I warned them against dividing the Party... (*Interruptions*).

श्री लखनलाल कपूर (किशनगंज) : अध्यक्ष महोदय, मैं कहने पर मजबूर हूं कि गवर्नमेंट की तरफ से फैक्टस् को छिपाया जा रहा है । जब जब दिल्ली में ऐसी घटनाएं होती हैं और जनता पर पुलिस का हमला होता है तो बार बार सरकार पुलिस को बचाने की कोशिश करती है । इन्द्रप्रस्थ भवन में जब पुलिस ने हमला किया था तो उस वक्त भी सरकार ने पुलिस का बचाव किया था । मैं यह चाहता हूं कि बाराबंकी के जो सज्जन शहीद हुए हैं जुडिशियल इनक्वायरी में उन का स्पेस्फिक रैफैंस होना चाहिये ।

श्री गुणानन्द ठाकुर (सहरसा) : अध्यक्ष महोदय, मैं आप के माध्यम से सरकार और इस सदन् को सूचना देना चाहता हूं कि कल के प्रदर्शन के दौरान घायल हुए डा० वैद्यनाथ झा, एम० एल० ए०, बिहार विधान सभा की हाल बड़ी नाज़ुक है । वह विलिंगडन अस्पताल में हैं । सरकार तत्काल उन की उचित रूप से पूर्ण देखभाल की व्यवस्था करे वरना मुझे लगता है कि जैसे हमारे बाराबंकी के साथी मर गये हैं वह भी मर सकते हैं । मैं पुनः सदन् को यह बतलाना चाह रहा हूं कि डा० वैद्यनाथ झा, एम० एल० ए०, बिहार विधान सभा की हालत बड़ी नाज़ुक है...

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा भी बराबर खड़ी हुई हैं वे भी दो शब्द कह लें ।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा (बाढ़) : अध्यक्ष महोदय, यह आदिवासी और हरिजन औरतें और छोटे छोटे बच्चे उन के साथ आये थे । अब वह अपने साथ दो, चार या पांच रुपये लेकर आये होंगे । यहां पर एक आधा कपड़ा लेकर आये थे । वह सब जलूस में साथ लाये थे । हालत यह है कि अब उन के पास कपड़ा और एक पैसा, एक छदाम तक नहीं है । सरकार ने कोई खोज खबर नहीं ली है । यह लोग कैम्प में यहां आये हुए हैं । उन्होंने खाना खाया है या नहीं, कपड़ा उन के पास पहनने को है या नहीं सरकार ने उन की कोई खोज खबर नहीं ली है । डाक्टर सुशीला नायर और श्रीमती सुचेता कृपालानी ने जाकर उन की दर्दनाक हालत देखी है...

श्री समर गुह : श्री खाडिलकर हंस रहे हैं । पीपुल के डिफेंडर हंस रहे हैं । वह बड़े सोशलिस्ट बनते हैं । उन को हंसते हुए शर्म नहीं आती ?

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा : औरतों के कपड़ों की केवल धज्जियां रह गयी हैं और वह किसी तरह कपड़े को पकड़ कर अपने तन की लाज

बचाये बैठी हुई हैं । हकीकत यह है कि उन को अपनी हया तक को छिपाने के वास्ते कपड़ा नहीं है । हमने कुछ कपड़ा इकट्ठा किया ताकि वे बेचारी औरतें अपने बदन की लाज छिपा सकें बाक़ी इस सरकार को तो लाज आती नहीं है । सरकार को तो शर्म ही नहीं लेकिन वह बेचारी अपने तन की लाज ढक सकें उस के लिए लोगों ने कुछ कपड़ों का इन्तजाम करके दिया है । यह सरकार एक तमाशबीन की तरह तमाशा देख रही है । आज उन के पास एक पैसा भी नहीं बचा है, सरकार को कोई फिक्र नहीं है ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहती हूं कि डा० सुशीला नायर और श्रीमती सुचेता कृपालानी एक बजे रात में पुलिस स्टेशन से एक घायल व्यक्ति को लेकर अस्पताल गई और प्लास्टर लगवाया और पट्टी बंधवाई लेकिन पुलिस को उस की कोई पर्वाह नहीं थी । कल पार्लियामेंट में इस कांड को लेकर इतनी बहस हुई, एक स्वर से इस हाउस के सभी माननीय सदस्यों ने इस दुखद कांड पर अपनी गंभीर चिन्ता व क्षोभ प्रकट किया और पुलिस की भर्त्सना की तो भी उस का कोई असर होता न जान पड़ा । जैसा मैंने कहा एक बजे रात को श्रीमती सुचेता कृपालानी और डाक्टर सुशीला नायर उस व्यक्ति को अपने हाथ से वहां से उठा कर ले गईं । उन का नाम पता भी नहीं जानती थीं । वहां जाकर उनके प्लास्टर लगवाया लेकिन यह सरकार सोती रही । मैं जानना चाहती हूं कि क्या दिल्ली में बस्तर कांड की पुनरावृत्ति हुई है ? जिस तरीक़े से बस्तर में उस समय आदिबासियों को बेरहमी से मारा गया था उसी तरीक़े से दिल्ली शहर में जोकि भारत सरकार की राजधानी है आदिबासी और हरिजनों को पुलिस द्वारा बेरहमी से पीटा गया है मारा गया है । वैसे यह सरकार कहने को कहती है कि हम हरिजनों और आदिवासियों की देखभाल करते हैं लेकिन हक़ीकत यह है कि उसकी छत्रछाया में आदिवासियों और हरिजनों का खून बहाया गया है, उन के कपड़े फाड़े गये हैं । औरतों को बेरहमी से पीटा गया है और कपड़े फट कर धज्जी हो गये हैं और तन की लाज ढंकना मुश्किल हो रहा है । आज वे बेचारे भूखे व नंगे बैठे हुए हैं । यह सरकार कैसी है उस की यह एक निशानी और अच्छा सबूत है ।

SHRI RANGA : I endorse every word that has fallen from the lips of my revered friend and leader, Kripalaniji. I need not say anything more. Yesterday I had said that it was not the police but this Government, this Home Minister, this Prime Minister, who were responsible for having misguided the police and having led us into this terrible catastrophe. I do not know how they feel about it. If I had been on their side, I would have known how I would have felt and how they would have felt. I am sure, they are also feeling so unhappy; but now they are suppressing it. Therefore, they make themselves responsible for this tragedy which has excited Dada to the extent that it has excited him.

श्री कंवर लाल गुप्त : मेरा एक ही सवाल है और वह यह कि जो जुडिशियल इनक्वायरी होगी उस में होम मिनिस्टर ने पुलिस को क्या हिदायतें दीं, डिप्टी होम मिनिस्टर ने पुलिस को क्या हिदायतें दीं और प्राइम मिनिस्टर ने पुलिस को क्या हिदायतें दीं, उन से पुलिस ने क्या क्या पूछा और पुलिस को उन्होंने क्या क्या जवाब दिया इस के बारे में पूरी जांच होनी चाहिए क्योंकि आखिर यह जो सब हुआ इस के लिये जिम्मेदार यह सरकार है, होम मिनिस्टर जिम्मेदार हैं और प्राइम मिनिस्टर जिम्मेदार हैं और इसीलिए इन लोगों ने पुलिस को क्या क्या कहा इस की भी उस में पूरी जांच होनी चाहिये । कहीं यह न हो कि पुलिस के कुछ अफसरों को स्केप-गोट बना कर हम छुट्टी कर दें । यह नहीं होना चाहिये ।

MR. SPEAKER : The hon. Minister.

SHRI SAMAR GUHA : He should first apologise to this House for his brutal, inhuman and satanic statement that he has made. Otherwise, we are not going to allow him to speak. We are not going to hear him... (*Interruptions*).

श्री रवि राय : आप माफी मंगवाइये ।

DR. RAM SUBHAG SINGH (Buxar): A respectable word should be used before the word "Bihari"; whether they are going to use it or not . . . (*Interruptions*).

श्री जनेश्वर मिश्र (फूलपुर) : पटेल चौक से हमारे जार्ज फरनेन्डीज़ और अर्जुन सिंह भदौरिया को यह लोग पुलिस वैन में पकड़ कर विलिंग्डन अस्पताल ले गये । जब कोई संसद्-सदस्य पुलिस की कस्टडी में आता है तब आप को खबर दी जाती है । यह हमारा विशेषाधिकार है । लेकिन आप को नहीं बतलाया गया क्या यह ठीक है ?

दूसरी बात हम यह जानना चाहते हैं कि क्या यहां पर कोई जिलाधीश अरोड़ा नाम का है और वह अरोड़ा राज्य सभा के माननीय सदस्य श्री अर्जुन अरोड़ा का रिश्तेदार है ? चूंकि श्री अर्जुन अरोड़ा से श्री राज नारायण का झगड़ा हुआ था इस लिये उस का बदला लेने के लिये क्या सोशलिस्टों पर लाठी चलाई गई ?

SHRI MANUBHAI PATEL: (Dabhoi): There is one small point pertaining to Shri George Fernandes.

जार्ज फरनेन्डीज़ जब वहां पर थे तब एक घंटा बीस मिनट तक उन की कोई देख भाल नहीं की गई । मुझे कहना है कि जो पार्लियामेंट के फोटोग्राफर हैं उन को भेज कर जार्ज फरनेन्डीज के शरीर पर जो घाव हैं उन की फोटो करवाई जाय । वह इतने गहरे हैं कि उन को ठीक से देखा जाना चाहिये था मगर एक घंटा बीस मिनट तक उन को देखने के लिये कोई नहीं गया । उन्होंने कहा कि मैं जार्ज फरनेन्डीज़ हूं । तब उनसे पूछा कि कौन जार्ज फरनेन्डीज । वह खादी के कपड़े पहने हुए थे तो कहा, अच्छा तुम खादी के कपड़े पहने हुए हो ? मैं कहना चाहता हूं कि इन सब बातों की जांच होनी चाहिये ।

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: Sir, there is no question of . . .

SHRI SAMAR GUHA: He should first apologise . . . (*Interruptions*).

श्री रवि राय : उन से माफी मंगवाइये पहले ।

श्री समर गुह : वह कहते हैं कि फलाना आदमी फलाना हुआ ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी (मुरादाबाद) : दाखिला किस ने किया ? पुलिस वाले ले कर गये या नहीं ?

SHRI SAMAR GUHA: He has disgraced the whole House. He has outraged the sense of human values by making such a statement . . . (*Interruption*). He should start with an apology to the House. Otherwise, we will not allow him to speak.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: As I was saying, there is no question of hiding any facts from the House. Whatever facts we have, we shall lay before the House. We shall provide all the facts. . . .

SHRI SAMAR GUHA: He should apologise first.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: I am always respectful to human beings. If I have omitted, because of inadvertance, I am sorry for it. I did not do it deliberately. It must be a slip of the tongue. I am always respectful to human beings.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Sir, he read out a written statement. How was that a slip of the tongue?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: It was not a written statement. I spoke extempore.

The hon. Member, Shri Atal Bihari Vajpayee, wanted to know the particulars of the doctor's report. I have got it here. I shall read it out. It says:

> "He was found to be cornalase not responding to painful stimuli pulse was 100/MT irregular BP was 170/94 MMUG pupils were not reacting to light. Hauratina in the occipetal region was found (approximate time of injury five to six hours back).

He was put on the usual head injury treatment and was immediately referred to main surgeon X-ray skull AP and lateral veinous were taken.

The patient's condition deteriorated in spite of all treatment and he died on 7-4-70 at 2.15 A.M."

This is the report of the doctor.

Then, Shri Ranjeet Singh wanted to know the number of persons who were treated in the Willingdon Hospital. According to the present information that we have, 52 persons received medical attention in the Willingdon Hospital. 15 persons were admitted and the rest were discharged. 11 demonstrators were treated in the Parliament House dispensary.

SHRI S. M. KRISHNA (Mandya): How many were admitted by the police? That was the question. Whatever other information the hon Members want shall be collected and given to the House. It goes without saying that we are more sorry than anybodyelse for what has happened here. (*Interruptions*). We are extremely distressed that one of the gentlemen died as a result of all that has happened. (*Interruptions*). There are many other things that the hon. Members raised. The judicial inquiry which has been ordered into this incident will cover most of these things. We shall try to make the judicial inquiry as wide as possible so that all these things can be covered and judicially all of them are inquired into. We do not want to cover up anybody. We do not want to cover anybody's guilt and anybody who is guilty...

AN HON. MEMBER: You are yourselves guilty.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): Suspend those officers.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: ...will all be dealt with according to law.

I must say that there is no political intention behind it. Nobody wants to take advantage of it. It has nothing to do with the politics of the country. An hon. Member who is a good friend of mine was saying Mr. Arjun Arora's connection with the Deputy Commissioner, Delhi. I do not know whether they are related to each other. As far as I know, they are not. Even if they are, there is no question of any civil servant taking a clue of that. I don't think it is true to say... (*Interruptions*) Every other point the hon. Members raised would be looked into and we shall try to do whatever is necessary.

13.37 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

ANNUAL REPORT OF HINDUSTAN MACHINE TOOLS LTD

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI BHANU PRAKASH SINGH) : On behalf of Shri F. A. AHMED,

I beg to lay on the Table:—

(1) A copy each of the following papers under sub-section (1) of section 619A of the Companies Act, 1956:—

(i) Review by the Government on the working of the Hindustan Machine Tools Limited, Bangalore, for the year 1967-68.

(ii) Annual Report of the Hindustan Machine Tools Limited, Bangalore, for the year 1967-68 along with the Audited Accounts and the comments of the Comptroller and Auditor General thereon.

(2) A statement showing reasons for delay in laying the above papers. [*Placed in Library. See* No. LT-3122/70.]

NOTICE *re* : IMPORT POLICY FOR NEWSPRINT, 1970-71

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING, AND IN THE DEPARTMENT OF COMMUNICATIONS (SHRI I. K. GUJRAL): On behalf of Shri Satya Narayan Sinha, I beg to lay on the Table a copy of the Public Notice No. 51-ITC(PN)/70, dated the 7th April, 1970 regarding Import Policy for Newsprint for the year 1970-71 in respect of newspapers and periodicals.

[*Placed in Library. See* No. LT-3123/70.]